कृषि-खाद्य प्रणालियों में संलग्न महिलाओं पर जलवायु का प्रभाव

प्रिलिम्स के लिये:

राष्ट्रीय महिला किसान दिवस, **लॉस एंड डैमेज फंड**, **जलवायु परिवर्तन**

मेन्स के लिये:

महिला किसानों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, कृषि, रोज़गार और उत्पादन, खाद्य सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका

स्रोत: डाउन टू अर्थ

चर्चा में क्यों?

फ्रंटियर्स इन सस्टेनेबल फूड सिस्टम्स जर्नल में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन में पूरे विश्व में कृषि-खाद्य प्रणालियों में संलग्न महिलाओं पर जलवायु संकट के असमान प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

- यह शोध **कृषि क्षेत्र में महिलाओं की असुरक्षा** पर प्रकाश डालते हुए उन हॉटस्पॉट की पहचान करता है जहाँ जलवायु जोखिम की सबसे गंभीर स्थिति है।

नोट:

- कृषि-खाद्य प्रणालियाँ **व्यक्तियों,** गतिविधियों और संसाधनों का **नेटवर्क हैं** जो खाद्यान्न का उत्पादन, प्रसंस्करण, वितरण तथा उपभोग करते हैं।
  - इनमें किसान, व्यापारी, प्रोसेसर, खुदरा विक्रेता, उपभोक्ता आदि शामिल हैं, जो कि खाद्य मूल्य शृंखला में शामिल हैं।

अध्ययन के मुख्य बिंदु क्या हैं?

- **जलवायु परिवर्तन के खतरों की वैश्विक रैंकिंग:**
  - अध्ययन में कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं द्वारा सामना किये जाने वाले जलवायु परिवर्तन के खतरे के आधार पर 87 देशों को रैंक दिया गया है।
    - **भारत 12वें स्थान पर है,** अन्य एशियाई देशों बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं नेपाल को भी गंभीर जोखिम का सामना करना पड़ रहा है।
- **उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान:**
  - कृषि-खाद्य प्रणालियाँ, जिनमें उत्पादन, कटाई के बाद देख-रेख और वितरण शामिल है, विशेष रूप से जोखिम में हैं।
  - अफ्रीकी और एशियाई क्षेत्रों में मध्य, **पूर्व व दक्षिणी अफ्रीका तथा पश्चिम एवं दक्षिण एशिया** अत्यधिक भेद्यता वाले क्षेत्रों के रूप में उभरे हैं।
    - **निम्न और मध्यम आय वाले देशों (LMIC)** में रहने वाले व्यक्तियों को अधिक जोखिम है।
- **जलवायु-कृषि-लिंग असमानता हॉटस्पॉट:**
  - अनुसंधान ने क्षेत्रों को **'जलवायु-कृषि-लिंग असमानता हॉटस्पॉट'** के रूप में मैप करने के लिये **जलवायु, लिंग और कृषि-खाद्य प्रणालियों** पर संयुक्त अंतर्दृष्टि प्रदान की।
  - अध्ययन ने इन संकेतकों के आधार पर प्रत्येक देश के जोखिम की गणना की और प्रत्येक LMIC देश के लिये रंग-कोडित मानचित्र पर स्कोर अंकित किया।
  - ये हॉटस्पॉट मानचित्र लिंग-उत्तरदायी जलवायु कार्रवाई के संबंध में मार्गदर्शन कर सकते हैं, विशेष रूप से जलवायु सम्मेलन (COP 28) और जलवायु निवेश जैसे आगामी जलवायु सम्मेलनों में।

- यह **[लॉस एंड डैमेज फंड]** और अन्य जलवायु निवेशों के संबंध में जारी वार्ता में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

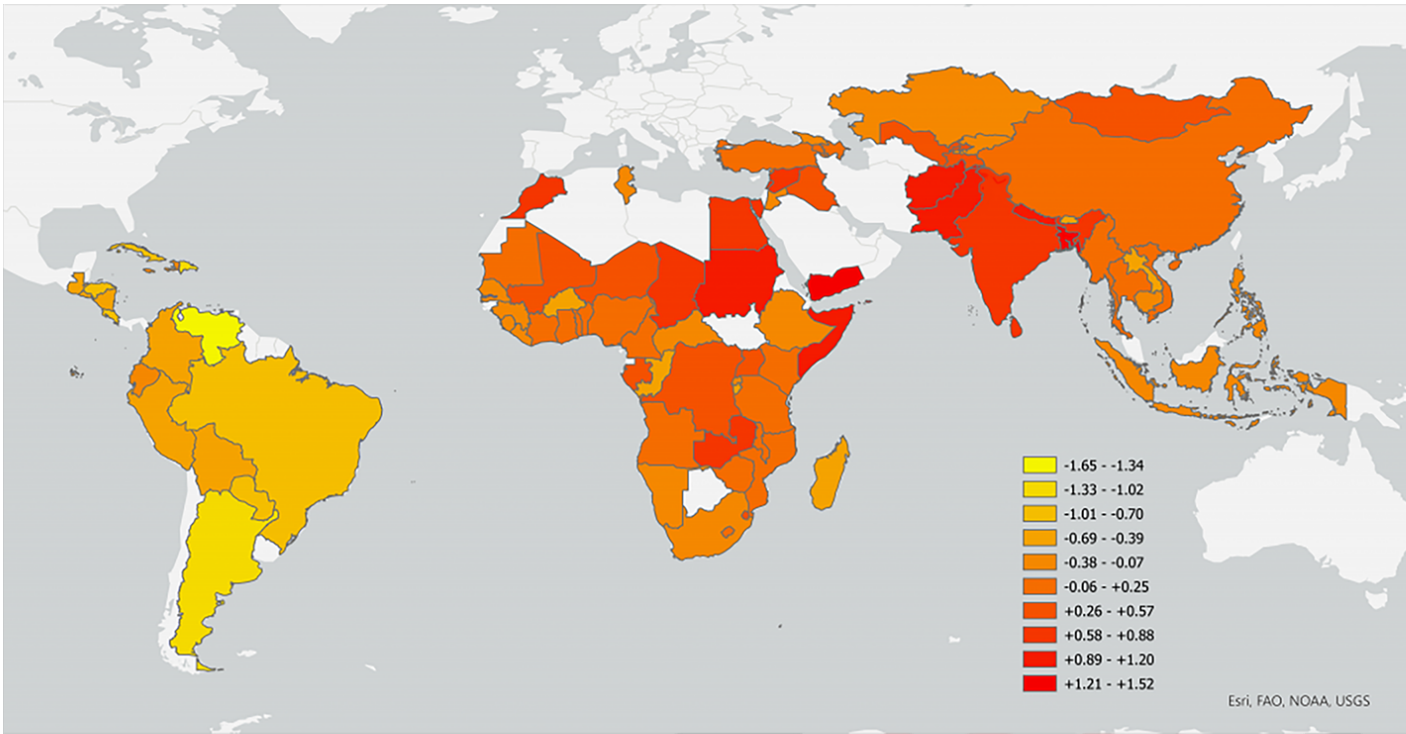

//

- **नीति निर्माण और जलवायु कार्रवाई:**
  - यह अध्ययन कृषि में महिलाओं पर खतरों के असमान प्रभाव को दर्शाते हुए **नीति निर्माण** के लिये एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश बिंदु के रूप में कार्य करता है।
  - पिछले अध्ययनों से पता चला है कि जलवायु परिवर्तन से जुड़ी प्राकृतिक आपदाओं के बाद **महिलाओं और लड़कियों के भूखे रहने की संभावना अधिक** है।
    - भारत में पुरुषों की तुलना में दोगुनी संख्या में महिलाओं ने **सूखे** के कारण कम खाना खाने की बात कही।
  - हॉटस्पॉट मानचित्र निर्णय निर्माताओं और निवेशकों को उन क्षेत्रों में **वित्त और निवेश को लक्षित करने में** सहायता कर सकते हैं, जहाँ महिलाएँ जलवायु परिवर्तन के जोखिमों से सबसे ज़्यादा प्रभावित होती हैं।

कृषि-खाद्य प्रणालियों में संलग्न महिलाओं को जलवायु परिवर्तन कैसे प्रभावित करता है?

- **खाद्य सुरक्षा और आय में कमी:**
  - जलवायु परिवर्तन कृषि उत्पादन को बाधित करता है, फसल की पैदावार और गुणवत्ता को कम करता है तथा कीटों और बीमारियों का खतरा बढ़ाता है।
    - इससे **महिला किसानों की खाद्य सुरक्षा और आय प्रभावित होती है,** जो प्राय अपनी आजीविका के लिये कृषि पर निर्भर रहती हैं।
    - महिला किसानों को बाज़ार, ऋण, **इनपुट और विस्तार सेवाओं तक पहुँचने में भी अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है,** जिससे जलवायु संकट एवं तनाव से निपटने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है।
- **बढ़ा हुआ कार्यभार:**
  - जलवायु परिवर्तन से **जल, श्रम और प्राकृतिक संसाधनों की मांग बढ़ जाती है** , जिससे महिला किसानों पर कार्य का बोझ बढ़ जाता है, उन पर अक्सर जल, ईंधन हेतु लकड़ी और चारा इकट्ठा करने के साथ-साथ **घरेलू एवं देखभाल कर्त्तव्यों का पालन करने की ज़िम्मेदारी होती है।**
  - महिला किसानों को भी **बदलते मौसम और वर्षा पैटर्न के अनुरूप ढलना पड़ता है,** जिसके लिये उन्हें न**ई फसलें, तकनीकें या प्रथाएँ अपनाने या अन्य क्षेत्रों** में पलायन करने की आवश्यकता हो सकती है।
- **स्वास्थ्य और खुशहाली में कमी:**
  - जलवायु परिवर्तन महिला किसानों के स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करता है, **जो हीट स्ट्रोक, जलजनित एवं वेक्टर जनित बीमारियों, कुपोषण व मानसिक तनाव के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।**
    - महिला किसानों के **पास स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता और स्वच्छता सुविधाओं तक भी कम पहुँच है** , जिससे जलवायु से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों के प्रति उनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है।

- जलवायु परिवर्तन **लिंग आधारित हिंसा** को भी बढ़ाता है, विशेषकर संघर्ष और आपदा स्थितियों में।

- **सीमित भागीदारी तथा सशक्तीकरण:**
  - जलवायु परिवर्तन महिला किसानों की भागीदारी तथा सशक्तीकरण प्रयासों को प्रभावित करता है, जिन्हें अमूमन कृषि तथा जलवायु परिवर्तन से संबंधित **निर्णय लेने की प्रक्रियाओं** एवं संस्थानों **से बाहर रखा जाता है**।
  - महिला किसानों की पहुँच सूचना, शिक्षा तथा प्रशिक्षण तक कम है, जिससे **जलवायु परिवर्तन के प्रति उनकी जागरूकता एवं अनुकूलन की क्षमता सीमित** हो जाती है।
    - महिला किसानों को **सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानदंडों** व बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है जो उनकी गतिशीलता, स्वायत्तता तथा अधिकारों को प्रतिबंधित करते हैं।

कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं से संबंधित सरकारी पहलें क्या हैं?

- **राष्ट्रीय महिला किसान दिवस** (**कृषि क्षेत्र में महिला किसानों** के बहुमूल्य योगदान को पहचानने तथा उसकी सराहना करने के लिये **भारत में प्रतिवर्ष 15 अक्तूबर** को मनाया जाता है)।
- राष्ट्रीय सतत् कृषि मिशन (NMSA)।
- परंपरागत कृषि विकास योजना।
- महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना (MKSP)।
- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (MGNREGA)।

आगे की राह

- भूमि, जल, ऋण, इनपुट, बाज़ार, विस्तार तथा सामाजिक सुरक्षा जैसे **संसाधनों**, सेवाओं एवं अवसरों **तक महिलाओं की पहुँच व नियंत्रण बढ़ाना।**
- कृषक समूह, सहकारी समिति, बैठक तथा नीति प्लेटफॉर्म जैसे **निर्णय लेने एवं** शासन संरचनाओं में **महिलाओं की भागीदारी** व नेतृत्व **को बढ़ावा देना।**
- **जलवायु-स्मार्ट कृषि**, आपदा जोखिम में कमी, जलवायु सूचना एवं प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों **पर महिलाओं के ज्ञान तथा कौशल** को सशक्त करना।
- सामाजिक व सांस्कृतिक मानदंडों, कानूनी एवं संस्थागत बाधाओं व लिंग आधारित हिंसा जैसे लैंगिक असमानता के अंतर्निहित कारणों का संधान कर महिला सशक्तीकरण एवं अभिकरण का समर्थन करना।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

?????:

प्रश्न. उन विभिन्न आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक बलों पर चर्चा कीजिये जिनसे भारत में कृषि में महिलाकरण को बढ़ावा मिल रहा है। (2014)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/climate-impact-on-women-in-agri-food-systems